सम्पूर्ण स्वतन्त्रता ईष्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है

खुले आकाष में उड़ते पंछियों को देखों। सभी का दिल होता है कि 'काष! मुझे भी पंख लगे होते तो मैं भी संसार की हर डाली-फूल-कली पर भ्रमण करता रहता। जेल में बंद कैदी की तरह पिंजरे में कैद पंछी भी बार-बार पंख फड़फड़ाता है। दिल मसोस कर पुनः बैठ जाता है। यहाँ तक की ममतामयी माँ की गोद में बैठा बालक भी स्वतन्त्र भ्रमण करने हेतु बार-बार मचलता रहता है। जानवरों को भी बाड़े या खूंटे से खोलते ही वे कुलाँचे मारते हुये अपनी स्वतन्त्रता की खुषी का इजहार करते हैं। इसी प्रकार देष, संस्कृति परतन्त्र हो जाती है तो वहाँ के नागरिक मनवांछित अभिव्यक्ति न कर, जबरदस्ती चलाये जाते हैं। मेरा भारत जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था, पिछली कुछ ही सदियों से मुस्लिम षासकों व क्रिष्चियन मिषनरियों द्वारा परतन्त्र बना लिया गया था। विदेषियों ने यहाँ की धन सम्पदा ही नही लूटा, साहित्य, धर्म संस्कृति और संस्कारों पर भी प्रहार करते रहे। अपनी रहन-सहन, खान-पान और बोलचाल थोपने के लिये यहाँ के सुसंस्कारित लोगों को प्रलोभन ही नही, मान-अपमान और प्रताड़नायें भी देते थे। यहाँ के दैवीय पद्चिन्हों को मिटाते हुये खाओ-पीओ और मौज करने वाले भोगवादी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करते रहे। फूट डालो और राज करो' की कपट नीति से सम्पूर्ण राश्ट्र को अधीन बनाकर यहाँ की राजनीतिक सम्प्रभुता स्वयं के ही हाथों में रख लिये थे।

स्वतन्त्रता की भारतीय वीरांगनायें :- भारतीय स्वतन्त्रता के षहीदों के षहादत की तो गाथा अंतहीन है। भारतीय वीरांगनाओं की वीरोचित स्मृतियों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अनेकों लेखिकाओं और कवित्रयों ने अपने लेखनी में प्राण भर कर देष प्रेम का ओजस्वी मन्त्र जनगण में फूँका। एनीबीसेन्ट आयी तो थी भारत में सत्य की खोज के लिये परन्तु वर्श १९१३ में 'कामन बिल' नामक साप्ताहिक पत्र निकाल कर उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम का षंखनाद किया। वे गरज कर कहा करती थी कि सत्य के अनुसंधान में चाहे समस्त लौकिक संबंध टूट जाये, मित्रता और सामाजिक बंधन टूट जायें, निर्जन पथों में क्यों न भटकना पड़े, सत्य चाहे मुझे मिटा ही क्यों न दें, परन्तु मैं सत्य का अनुसरण करने से अपने कदम कभी पीछे नहीं हटा सकती। कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर की बड़ी बहन स्वर्ण कुमारी ने 'भारती' नामक प्रसिद्ध पत्रिका के माध्यम से समाज में ब्याप्त कुरीतियों और अन्धविष्वासों पर जमकर प्रहार किया। उनकी पुत्री सरला देवी चौधरी ने भी अपनी कलम के कमाल से विदेषी गुलामी के प्रतिकार की ज्वाला को भड़काया जिससे अनेक युवक-युवतियाँ प्रेरित होकर स्वतन्त्रता के संग्राम में कूद पड़े।

सेवा, साधना और सद्गुणों की त्रिवेणी बहाने वाली निवेदिता का नारा था गरीबी और गुलामी से मुक्ति और देष सेवा के लिये समर्पण। 'युगान्तर' जैसी क्रांतिकारी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने समाज में नारी षिक्षा और जागृति पैदा की। भारत के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के कारण ही स्वामी विवेकानन्द नें उन्हें अपनी मानस कन्या माना था। अरविन्द उन्हें भगिनी निवेदिता तथा रविन्द्रनाथ लोकमाता कहा करते थे। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पाष्चात्य जगत में प्रसारित किया। कमला देवी चट्टोपाध्याय, स्वतन्त्रता संग्राम की जुझारू नेता तथा सामाजिक क्रांति की अग्रदूत थीं। दुर्गावाई देषमुख ब्रिटिष सरकार के खिलाफ क्रांतिकारी लेख लिखा करती थी। सुभद्रा कुमारी चौहान ने क्रांतिकारी गीत लिखने के अलावा स्वतन्त्रता के महायज्ञ में अपनी आहूति भी दे दी। महारानी लक्ष्मीबाई क्रांति की ऐसी मषाल जलाई जिसके आलोक में अनेक नौजवान सिर पर कफन बाँधकर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े । सुषीला देवी की कविताओं और लेखों में भी क्रांति का स्वर प्रमुख था। सुखदेव, राजगुरु और भगतसिंह की कुर्बानी का दर्द तो उनके पंजाबी गीतों में आज भी सिर चढ़कर बोलता है।

क्रांतिकारी यषपाल की पत्नी प्रकाषवती की लेखनी में भी क्रांति और राश्ट्रभक्ति का जज़्बा भरा हुआ था। गाँधी जी की प्रेरणा से विद्यादेवी कोकिला किषोरावस्था में ही राश्ट्रीय जागरण की कवितायें लिखा करती थी। भारत रत्न अरुणा आसफ अली ने भी आजादी का अलख जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हंसा मेहता और नयनतारा सहगल स्वतन्त्रता को बड़े ही बेबाक ढ़ंग से प्रतिध्वनित्व करती थी। ऐसी ही अनेक वीरांगनाओं ने अपनी सषक्त लेखनी के द्वारा स्वतन्त्रता रूपी आषा का दीपक जलाया जिसके उजाले में हजारों वीरों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर भारत माँ के भाल को ऊँचा उठाया। अब पुनः समय की माँग है समस्त संसार को सम्पूर्ण स्वन्तत्रता दिलाई जाये।

अद्वितीय भारतीय संस्कृति :- विकारों और मानस रोगों की बेड़ियों में जकड़े हुये नर-नारियों का जीवन बेहाल है। नित नये पापाचार, अत्याचार व भ्रश्टाचार के विस्तार से सर्वोच्च भारतीय संस्कार विकृत होते जा रहे हैं। लोगों का देवी-देवतायी स्वभाव परिवर्तन होना चहा रहा है। विलासीपन का प्रतिकार करने के लिये कुछ नौनिहाल सिर उठा कर आगे बढ़ने लगे हैं। आजादी का बाना पहनकर सहस्रों नर-नारी जब बापू गाँधी के सिद्धान्तों पर चलते हुये भारत को राजनीतिक स्वतन्त्रता दिलाने में जुट गये तो करोड़े कदम उनका अनुसरण करने लगे । वैसे ही भारत को सर्वतोमुखी स्वतन्त्रता दिलाने हेतु योगी-तपस्वी व समर्पित भाई बहिनें ईष्वरीय मूल्यों को धारण करते हुये कदम बढ़ायें तो करोड़े लोग उच्च संस्कारवान

बनकर विष्व को दैवी संसार बनाने में सफल हो जायेंगे। किसी भी समाज की महानता का मूल्यांकन उसकी संस्कृति और स्वतन्त्रता की उत्कृश्टता से किया जाता है। यहाँ की देवी-देवतायी संस्कृति सम्पूर्ण मानव समुदाय को उच्च संस्कारवान बनाने के कारण ही विष्व गुरु कहलाती थी। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और सामुहित सुव्यवस्था पर आधारित भारतीय संस्कृति की जड़ें आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित हैं। सत्य-स्वतन्त्रता-प्रेम-अहिंसा, परोपकार तथा विष्वबन्धुत्व से उर्वर यह भूमि सारे संसार को 'जीओ और जीने दो' की सीख देती रही है। तभी तो कवि इकबाल करते थे-

'यूनान मिश्र रोमाँ सब मिट गये जहाँ से अब तक मगर है बाकी नामो निशाँ हमारा' ।

समस्या प्रधान समय :- सन् १९४७ में स्वतन्त्रता का सूर्य उदय होते ही स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदानों की गौरवगाथायें चारों तरफ गायी जाने लगी। गाँधी जी जैसे देष के अग्रणी कर्णधार भारत के भविश्य के ऊँचे-ऊँचे सपने संजोकर राम राज्य लाना चाह रहे थे। नया संविधान, पंचवर्शीय योजनायें, पंचषील जैसे सिद्धान्तों की खुषबू निकलते ही धर्म, सम्प्रदाय, देष-प्रान्त, ऊँच-नीच, पुराने रस्मों-रिवाज और पाष्चात्य अनुसरण की ऐसी मार पढ़ने लगी कि सारे के सारे मंसूबों पर पानी फिर गया। एक समस्या को हल करने की सोचे तब तक सैकड़ों दूसरी समस्यायें सुरसा दानव की तरह मुँह फाड़कर खड़ी हो जाती थी। परिवर्तन की सुन्दर सरिता में कुछ अच्छे मोड़ आये पर नैतिक पतन के कारण लोग तर्क-कुतर्क में ही डूबते उतराते रहें। भारत को स्वर्णिम सर्वोच्च बनाने का कार्य बहुत दुश्कर जान पड़ने लगा है। अब तो पूरे विष्व में ही विविध विघ्न व समस्यायें सदा अठखेलियाँ कर रही हैं। वैज्ञानिक क्रान्ति से लगने लगा था कि काली अमावस्या का अन्त होकर पुनः स्वर्णिम प्रभात आयेगा पर घोर अंहकार के 'तू-तू, मैं-मैं' में धंसे होने के कारण लोग विज्ञान का विस्फोटक रूप सामने खड़ा करते जा रहे हैं। लोग चाँद-सूर्य-सितारों के पार तो जाना चाह रहे हैं। पर अनेक संघर्शों में बंधे होने के कारण भय असुरक्षा-आषंका और चिन्ता के पिंजरों में ही बंद रहते हैं।

अब सर्व आत्माओं के बापू परमपिता षिव परमात्मा का प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा हमारे सपनों को साकार करने हेतु सम्पूर्ण स्वतन्त्रता का बिगुल बजना षुरु हो गया है। वे आत्मा-परमात्मा और सृश्टिचक्र के सत्य परिचय द्वारा सभी का आत्मविष्वास जगाकर आध्यात्मिक चेतना का पुनः संचार करने लगे हैं। मानव अपने आन्तरिक सौंदर्य को समझकर विकारी आकर्शणों से विमुख हो जाये तो घर गृहस्थ में रहते हुये भी सारे संसार में दिव्य षक्तियों का सकाष-प्रकाष भेंज सकता है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से भरपूर होकर, कमल समान न्यारे प्यारे जीवन द्वारा, मुक्ति जीवन मुक्ति का ईष्वरीय अधिकार पा सकते हैं। ईष्वरीय ज्ञान योग के बल से विकारों जैसे दुर्जेय माने जाने दुष्मनों को धराषायी कर धरा पर पुनः पावन राम-राज्य स्थापित कर सकते हैं। जब राश्ट्रपिता गाँधी के पदचिन्हों पर चलकर हमने राजनीतिक स्वतन्त्रता हांसिल कर ली तो परमपिता षिव परमात्मा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा का अनुगमन कर सम्पूर्ण स्वतन्त्रता ईष्वरीय अधिकार के रूप में सहजता से पा सकते हैं। मूल्यहीन मानवता की डूबती नैया के खिवैया सर्वषक्तिमान षिव सृश्टि के सृजनहार ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दुनियाँ की कलम लगाने का काम प्रारम्भ कर चुके है। इतिहास व भूगोल के हूबहू पुनरावृति का सत्य परिचय भी सभी को समझा रहे हैं।

आत्म-स्थिति में स्थिर होकर ही सम्पूर्ण स्वतन्त्रता :- मानव चैतन्य प्राणी है। चेतना आत्मा के ही अन्दर है। मानव, पृथ्वी-समुद्र-आकाष सब का थाह लगा रहा है, पर 'मैं कौन हूँ' की आसान पहेली ही हल नहीं कर पा रहा है। जो स्वयं से यह सवाल नहीं पूछता, उसके लिये सद्ज्ञान और सच्ची स्वतन्त्रता के द्वार बन्द हो जाते हैं। विकृतियों के विकट द्वार की चाबी यही है कि सदा स्वयं से, स्वयं के बारे में तथा परमपिता परमात्मा के बारे में यह पूछते रहें कि 'मै कौन हूँ' तथा वो कौन हैं ? अपनी अन्तरात्मा की गहराइयों में इन प्रष्नों को गुंजाते रहने से आत्मिक भाव का परम प्रकाष आपको डबल ताजधारी बना देगा। दो ताज वाले देवी-देवताओं को ही जीवन-मुक्त, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कलाधारी, सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है। यह पद पाना ही सम्पूर्ण स्वतन्त्रता का वरण करना है। आत्मस्थिति का सुख भौतिक सुखों से कहीं अधिक आनन्ददायी और अनुपम है। सदा परमात्म स्मृति में रहने से दिग-दिगन्त में अंहिसा और विष्वबन्धुत्व की सुगन्ध महकने लगती है। आत्मस्थिति का अनहदनाद सम्पूर्ण स्वतन्त्रता की असीम अनुभूति से सारे संसार को भरपूर करता जायेगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com